

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र।

सत्र 3, ईश्वर को जानना और बाइबिल की कहानी

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 3 है, ईश्वर और बाइबिल की कहानी को जानना और ईश्वर और हमारे धर्मशास्त्र को जानना।

हम रहस्योद्घाटन और परमेश्वर के वचन के सिद्धांतों पर अपने व्याख्यान जारी रखते हैं और उसके बाद, अभी भी बाइबिल परिचय का यह हिस्सा है। हमने पीटर जेन्सन की मदद से एक ऐतिहासिक परिचय दिया और अब क्रिस्टोफर मॉर्गन के ईसाई धर्मशास्त्र, ईश्वर को जानना और बाइबिल की कहानी की मदद से बाइबिल परिचय कर रहे हैं। हम बाइबिल के प्रकरणों के माध्यम से ईश्वर के ज्ञान के बारे में सोचना चाहते हैं, यदि आप चाहें तो, सृष्टि, पतन, मुक्ति और पूर्णता के बारे में।

सृष्टि। आरंभ में, परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की, उत्पत्ति 1.1। पदार्थ, स्थान या समय से पहले ही अस्तित्व में, शाश्वत, स्वयं-अस्तित्ववान परमेश्वर ने ब्रह्मांड और जो कुछ भी विद्यमान है, उसकी रचना की। ब्रूस वाल्टके ने उत्पत्ति 1:1 से 2:3 का परिचय देते हुए कहा कि सृष्टि का विवरण एक अत्यंत परिष्कृत प्रस्तुति है जिसे सृष्टिकर्ता परमेश्वर की उत्कृष्टता, शक्ति, महिमा और बुद्धि पर जोर देने और वाचा समुदाय के विश्वदृष्टिकोण की नींव रखने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

यह वाल्टके की उत्पत्ति से है, जो एक टिप्पणी है। उत्पत्ति 1 में मुख्य पात्र के रूप में, परमेश्वर सृजन करता है, कहता है, देखता है, अलग करता है, नाम देता है, बनाता है, नियुक्त करता है, आशीर्वाद देता है, समाप्त करता है, पवित्र बनाता है, और विश्राम करता है। परमेश्वर आकाश, सूर्य, चंद्रमा, जल, वृक्ष, पशु या कोई अन्य निर्मित वस्तु नहीं है।

ईश्वर उन्हें बनाता है, और वे उसके अधीन हैं। सृष्टि न तो ईश्वर है और न ही ईश्वर का हिस्सा है। वह निरपेक्ष है और उसका स्वतंत्र अस्तित्व है, जबकि सृष्टि ने उससे अस्तित्व प्राप्त किया है और निरंतर अपने पालनहार के रूप में उस पर निर्भर है।

प्रेरितों के काम 17:25 से 28 तक देखें। सृष्टिकर्ता जो सब से ऊपर और परे है, सर्वोच्च, प्रभुता संपन्न है, और जिसके पास अद्भुत अधिकार और शक्ति है। एक राजा की तरह, वह अपने वचन से अपनी इच्छा को प्रभावित करता है, और शून्य से चीजों को अस्तित्व में लाता है।

उत्पत्ति 1:3, इब्रानियों 11:3. वह सभी सृष्टि पर अपने अधिकार को प्रदर्शित करता है, उत्पत्ति 1:5 में तत्वों को बुलाकर और उनका नाम देकर। पारलौकिक प्रभुता संपन्न सृष्टिकर्ता भी व्यक्तिगत है। सृष्टि के प्रत्येक दिन, परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक विवरण में शामिल होता है, अपनी दुनिया को इस तरह से गढ़ता है कि वह प्रसन्न हो और उसके प्राणियों को लाभ हो। नाटकीय ढंग

से, छठे दिन, वह व्यक्तिगत रूप से मनुष्य को अपनी छवि में बनाता है, उसमें जीवन की साँस भरता है।

समुदाय में और सृष्टि पर प्रभुत्व रखते हैं। जैसा कि डीए कार्सन हमें याद दिलाते हैं, उद्धरण, हमें एक आश्चर्यजनक गरिमा प्रदान की जाती है, और हमारे भीतर ईश्वर को करीब से जानने की गहन क्षमता निहित है, उद्धरण बंद करें। कार्सन, द गैंगिंग ऑफ गॉड, उपशीर्षक ईसाई धर्म उत्तर आधुनिकता का सामना करता है।

हमें अपनी छवि में बनाकर, परमेश्वर हमें बाकी सृष्टि से अलग करता है और यह स्थापित करता है कि वह हमसे अलग है। हम परमेश्वर के नहीं हैं, बल्कि सृष्टिकर्ता की छवि में बनाए गए प्राणी हैं। परमेश्वर अच्छा भी है, जो उसकी सृष्टि की अच्छाई में परिलक्षित होता है और लगातार दोहराए जाने वाले वाक्य में पुष्ट होता है, "और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।"

उत्पत्ति 1:10, 12, 18, 21, 25. छठे दिन, सृष्टि को बहुत अच्छा बताया गया है, आयत 31. सृष्टि की अंतर्निहित अच्छाई आत्मा और पदार्थ के बीच एक मौलिक द्वैतवाद के लिए कोई जगह नहीं छोड़ती है, जैसे कि आत्मा अच्छी है और पदार्थ बुरा है।

वास्तव में, भौतिक सृष्टि ईश्वर की अच्छाई को दर्शाती है, जो प्रकाश, भूमि, वनस्पति, जानवरों और रेंगने वाले जीवों के उनके उदार प्रावधान में भी स्पष्ट है। ये मानवता के लाभ के लिए ईश्वर के आशीर्वाद हैं, जैसे कि ईश्वर से संबंध बनाने की क्षमता, प्रजनन के लिए उर्वरता और मानवता की भलाई के लिए पृथ्वी के प्रचुर प्रावधानों का उपयोग करने का अधिकार। हालाँकि सृष्टि अपने शिखर पर ईश्वर द्वारा अपनी छवि में मनुष्य के निर्माण में पहुँचती है, उत्पत्ति 1:1 से 2:3 ईश्वर के विश्राम में परिणत होती है।

सातवें दिन तक, परमेश्वर अपना रचनात्मक कार्य पूरा कर लेता है, विश्राम करता है, आशीर्वाद देता है, और उस दिन को सप्ताह के दिन की तरह पवित्र बनाता है। ऐसा करके, परमेश्वर अपनी सृष्टि और पूर्णता के उत्सव में अपनी खुशी और संतुष्टि प्रदर्शित करता है, और वह इस विशेष घटना का स्मरण करता है। परमेश्वर ने अदन की वाटिका को एक ऐसी जगह के रूप में प्रदान किया है जहाँ पुरुष और महिला रह सकते हैं और काम कर सकते हैं।

ईश्वर, उद्धरण, मनुष्य को बनाता है, बगीचा लगाता है, मनुष्य को वहाँ पहुँचाता है, उसके साथ रिश्ते की शर्तें तय करता है, और उसके लिए एक सहायक की तलाश करता है, जो स्त्री में परिणत होता है। जॉन सी. कोलिन्स, उत्पत्ति 1 से 4 उस उद्धरण का स्रोत है। मनुष्य ज़मीन की धूल से बना है, लेकिन धूल से कहीं ज़्यादा है।

उसका जीवन सीधे परमेश्वर की साँस से आता है, उत्पत्ति 2, 7. बगीचे को लगाने और मनुष्य को वहाँ ले जाने में, सृष्टिकर्ता और वाचा का प्रभु एक रमणीय और पवित्र स्थान प्रदान करता है जिसमें मनुष्य उसके साथ, एक दूसरे के साथ, जानवरों और भूमि के साथ एक सामंजस्यपूर्ण संबंध का आनंद ले सकते हैं। वाल्ट्के ने कहा, "ईडन का बगीचा एक मंदिर का बगीचा है, जिसे बाद में तम्बू में दर्शाया गया है।" वाल्ट्के, उत्पत्ति पृष्ठ 85।

इस प्रकार, यह उद्यान मनुष्यों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति को उजागर करता है। इसलिए, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अपनी छवि में बनाया, अच्छे के रूप में और अदन के बगीचे में अद्भुत विशेषाधिकारों और महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों के साथ। वे परमेश्वर के साथ एक निर्बाध संबंध, एक-दूसरे का अंतरंग आनंद और सृष्टि पर सौंपे गए अधिकार का अनुभव करते हैं।

परमेश्वर अपनी उपस्थिति में रहने के लिए नियम स्थापित करता है और कृपापूर्वक केवल एक निषेध रखता है: उन्हें अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खाना चाहिए। पतन हमारी अगली उपश्रेणी है। दुख की बात है कि आदम और हव्वा परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करते बल्कि गिर जाते हैं, उत्पत्ति 3। यह वृत्तांत एक प्रलोभन से शुरू होता है जो परमेश्वर की सत्यता, संप्रभुता और भलाई पर सवाल उठाता है।

प्रलोभन देने वाला चालाक है और परमेश्वर द्वारा स्थापित वाचा सम्बन्ध से स्त्री का ध्यान हटाता है। छंद छह से आठ में, पतन की कहानी का केंद्रीय दृश्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है। घातक अनुक्रम का वर्णन 3.6 में तेजी से किया गया है। उसने देखा, उसने लिया, उसने खाया, और उसने दिया, जिसका समापन उसने खाया में हुआ।

वेनहम छंद छह से आठ के मध्य बिंदु पर अवलोकन करते हैं, और वह खाते हैं, कथा में मुख्य क्रिया का उपयोग करते हैं, खाते हैं, और महिला की खाने की अतिरंजित अपेक्षा के बीच रखा जाता है। फल खाने के लिए अच्छा है, आंखों को प्रसन्न करता है, और इसके वास्तविक प्रभावों की अंतर्दृष्टि देता है। पुरुष और महिला की आँखें खुल जाती हैं। वे जानते हैं कि वे नग्न हैं, और वे पेड़ों के बीच छिप जाते हैं।

गॉर्डन वेनहम, उत्पत्ति 1 से 15, शब्द बाइबिल टिप्पणी। मैं बस थोड़ा और कहना चाहता हूँ। वेनहम शब्दों की गिनती करता है, और उसने खाया केंद्रीय है, और यह खाने में महिला की बढ़ी हुई अपेक्षाओं को वास्तविक प्रभावों से अलग करता है, जो विनाशकारी हैं।

यह विरोधाभास बहुत ही आश्चर्यजनक है। निषिद्ध फल वह नहीं देता जो प्रलोभनकर्ता ने वादा किया था, बल्कि अंधकारमय नई वास्तविकताएँ लाता है, जिनके बारे में अच्छे और सत्यनिष्ठ वाचा वाले प्रभु ने चेतावनी दी है। मानवीय विद्रोह का यह प्रारंभिक कार्य ईश्वरीय न्याय लाता है।

"वे खाने से पाप करते हैं, और इसलिए उन्हें खाने के लिए कष्ट उठाना पड़ता है। उसने अपने पति को पाप करने के लिए प्रेरित किया, और इसलिए वह उसके अधीन हो जाएगी। वे अपनी अवज्ञा से दुनिया में दर्द लेकर आए, और इसलिए उनके जीवन में दर्दनाक परिश्रम होगा।" एलन रॉस, क्रिएशन एंड ब्लेसिंग, पृष्ठ 148, एक अंतर्दृष्टिपूर्ण अध्ययन।

उनके पाप के परिणाम उचित और विनाशकारी हैं। दंपति को तुरंत शर्म आती है, उन्हें एहसास होता है कि वे नग्न हैं, 3:7।

वे परमेश्वर से अपनी दूरी महसूस करते हैं, यहां तक कि मूर्खतापूर्ण तरीके से उससे छिपने की कोशिश करते हैं, श्लोक 8 से 10। वे परमेश्वर से डरते हैं और वे इस बात से भी डरते हैं कि वह क्या प्रतिक्रिया देगा, श्लोक 9 और 10। एक दूसरे से उनका अलगाव तब भी उभर कर आता है

जब स्त्री सर्प को दोषी ठहराती है, जबकि पुरुष स्त्री को दोषी ठहराता है, और संकेत द्वारा, परमेश्वर को भी (श्लोक 10 से 13)।

दर्द और दुख भी होता है। महिला को प्रसव के समय अधिक दर्द होता है। पुरुष कीटों और खरपतवारों वाली भूमि पर भोजन उगाने की कोशिश में मेहनत करता है, और दोनों को अपने रिश्ते में असंगति का पता चलता है, श्लोक 15 से 19।

इससे भी बदतर, दंपति को अदन से और परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति से निर्वासित कर दिया जाता है, श्लोक 22 से 24. वे कितना चाहते थे कि उन्होंने परमेश्वर की चेतावनी सुनी होती। यदि तुम अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाओगे, तो तुम अवश्य मर जाओगे, 2:17.

निषिद्ध फल खाने पर, वे तुरंत गिरकर हृदयाघात जैसी किसी चीज़ से नहीं मरते, लेकिन वे मरते हैं। वे आध्यात्मिक रूप से मर जाते हैं, और उनके शरीर भी धीरे-धीरे क्षय का अनुभव करना शुरू कर देते हैं जो अंततः उनकी शारीरिक मृत्यु की ओर ले जाता है, 3:19। सबसे विनाशकारी यह है कि ये परिणाम केवल आदम और हव्वा पर ही नहीं बल्कि उनके वंशजों पर भी पड़ते हैं।

पाप तस्वीर में प्रवेश करता है और परमेश्वर, स्वयं, एक दूसरे और सृष्टि के साथ प्रत्येक मानवीय रिश्ते में व्यवधान और अलगाव लाता है। उत्पत्ति 4:11 का तात्कालिक संदर्भ और कथानक इस उदास नई वास्तविकता को रेखांकित करता है। 4-7 में, परमेश्वर कैन को चेतावनी देता है कि पाप दरवाजे पर बैठा है और उसकी इच्छा उसके लिए है, लेकिन उसे उस पर शासन करना चाहिए।

दुख की बात है कि कैन ने सलाह मानने से इनकार कर दिया और अपने भाई हाबिल को मार डाला। परिणामस्वरूप कैन को परमेश्वर द्वारा शाप दिया गया, उसे धरती से अलग कर दिया गया और परमेश्वर की उपस्थिति से निर्वासित कर दिया गया। उत्पत्ति 5 हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर ने मनुष्यों को अपनी छवि में बनाया और उन्हें आशीर्वाद दिया।

अध्याय हनोक और नूह के उल्लेख के माध्यम से आशा प्रदान करता है, लेकिन मृत्यु के क्षेत्र को गंभीरता से रेखांकित करता है, फिर वह आठ बार मरा। उत्पत्ति 6 पाप के विस्तार और तीव्रता को स्पष्ट करता है, जिसे विशाल, व्यापक, निरंतर और विशिष्ट के रूप में चित्रित किया गया है। ईश्वर ने कृपापूर्वक नूह के साथ एक वाचा स्थापित की और जलप्रलय के साथ मानवता का उचित न्याय किया।

उत्पत्ति 6:9. जल प्रलय के बाद, परमेश्वर सृष्टि के आशीर्वाद और आदेश पर फिर से जोर देता है और वाचा का वादा करता है। उत्पत्ति फिर बाबेल के टॉवर के इतिहास को याद करती है, जिस पर परमेश्वर उन अभिमानी, स्वार्थी मनुष्यों का न्याय करता है जो परमेश्वर की छवि-वाहक के रूप में सेवा करने और उसके नाम को आगे बढ़ाने के बजाय खुद के लिए नाम बनाने और अपने प्रभाव को बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

उत्पत्ति 11:9. सृष्टि. पतन.

अब, बाइबिल की कहानी में मुक्ति और ईश्वर का ज्ञान। शुरु है कि ईश्वर इस तरह के ब्रह्मांडीय विश्वासघात के लिए मानवता को पूरी तरह से खत्म नहीं करता है, बल्कि कृपापूर्वक इसके बजाय एक पुनर्स्थापना परियोजना शुरू करता है। वह ब्रह्मांड में मानवता को बहाल करने की प्रक्रिया शुरू करता है, विशेष रूप से मनुष्यों को पूर्ण छवि-धारक के रूप में बहाल करता है ताकि हम उस महिमा, पहचान और मिशन में भाग ले सकें और उसे प्रतिबिंबित कर सकें जिसकी हम हमेशा से लालसा करते रहे हैं।

परमेश्वर ने अब्राहम को मूर्तिपूजकों के परिवार से बुलाया और उसके साथ वाचा बाँधी, तथा उसके और उसके वंशजों के लिए परमेश्वर होने का वादा किया। उत्पत्ति 12:1-3.

17:7. परमेश्वर अब्राहम को एक भूमि देने का वादा करता है ताकि वह एक महान राष्ट्र बना सके और उसके द्वारा सभी लोगों को आशीर्वाद दे सके। 12:3.

अब्राहम से इसहाक और बाद में याकूब आए, जिनका नाम परमेश्वर ने बदलकर इस्राएल रख दिया और जिनसे परमेश्वर अपने लोगों की 12 जनजातियाँ लेकर आया। पुराने नियम का बाकी हिस्सा इस्राएल की 12 जनजातियों के साथ परमेश्वर के व्यवहार से संबंधित है। मूसा, बड़ी विपत्तियों और एक नाटकीय पलायन के माध्यम से, परमेश्वर इस्राएल को मिस्र की गुलामी से बाहर बुलाता है ताकि वे उसके लोग बन सकें।

वह उन्हें दस आज्ञाएँ देता है, उनका परमेश्वर होने का वादा करता है, और उन्हें अपने लोग होने का दावा करता है। वह उनके साथ रहने का वादा करता है और उन्हें वादा किया हुआ देश देता है, जिस पर वे कनानियों को हराने के बाद जोशुआ के नेतृत्व में कब्ज़ा करते हैं। जोशुआ के मरने के बाद, गिदोन, डेबोरा और सैमसन जैसे न्यायाधीश लोगों के नेता बन जाते हैं।

इतिहास खुद को दोहराता है क्योंकि पीढ़ी दर पीढ़ी शांति का अनुभव करती है, फिर विद्रोह करती है, फिर परमेश्वर का न्याय पाती है, फिर परमेश्वर को पुकारती है, और फिर एक बार फिर शांति का अनुभव करती है। परमेश्वर अपने लोगों को एक मानवीय राजा देता है, पहले शाऊल, फिर दाऊद, फिर सुलैमान। परमेश्वर के अपने दिल के अनुसार एक व्यक्ति दाऊद के अधीन, राज्य महत्वपूर्ण रूप से बढ़ता है।

यरूशलेम राजधानी बन जाता है, और परमेश्वर अपने लोगों के साथ अपनी वाचा का वादा फिर से दोहराता है। परमेश्वर दाऊद के वंशजों को एक राजवंश बनाने और उनमें से एक के सिंहासन को हमेशा के लिए स्थापित करने का वादा करता है। परमेश्वर दाऊद के बेटे सुलैमान का उपयोग एक मंदिर बनाने के लिए करता है जहाँ परमेश्वर की वाचा की उपस्थिति प्रकट होती है।

सुलैमान ने बहुत कुछ सही किया, लेकिन कई मामलों में परमेश्वर की अवज्ञा भी की, और इससे राज्य क्रमशः उत्तरी और दक्षिणी राज्यों, इस्राएल और यहूदा में विभाजित हो गया। परमेश्वर लोगों को वाचा के प्रति वफ़ादारी के लिए बुलाने के लिए कई भविष्यद्वक्ताओं को भेजता है। वे उसके लोगों को उन न्यायदंडों के बारे में चेतावनी देते हैं जो तब आएंगे जब वे अपने पापों का पश्चाताप नहीं करेंगे और प्रभु की ओर नहीं मुड़ेंगे।

फिर भी, लोग बार-बार उसके और उसके भविष्यवक्ताओं के खिलाफ विद्रोह करते हैं। जवाब में, वह दस जनजातियों के उत्तरी राज्य को 722 ईसा पूर्व में असीरिया में बंदी बना देता है और दो जनजातियों, यहूदा और बिन्यामीन के दक्षिणी राज्य को 586 ईसा पूर्व में बेबीलोन में बंदी बना देता है। भविष्यवक्ताओं के माध्यम से, परमेश्वर एक उद्धारकर्ता भेजने का भी वादा करता है, यशायाह 9:6 और 7, यशायाह 52:13 से 53:12।

परमेश्वर ने 70 साल बाद अपने लोगों को बेबीलोन की बंधुआई से मुक्त करके उनके देश में वापस लाने का वादा किया है, यिर्मयाह 25:11, और 12. और वह एज्रा और नहेम्याह के अधीन ऐसा करता है। लोगों ने यरूशलेम की दीवारों का पुनर्निर्माण किया और दूसरा मंदिर बनाया, फिर भी पुराने नियम का अंत परमेश्वर के लोगों द्वारा उससे दूर जाने के साथ होता है, मलाकी।

400 साल बाद, परमेश्वर अपने बेटे को वादा किए गए मसीहा, पीड़ित सेवक, इस्राएल के राजा और दुनिया के उद्धारकर्ता के रूप में भेजता है। परमेश्वर के पुत्र का गर्भाधान एक कुंवारी से होता है और वह पूरी तरह से ईश्वरीय रहते हुए पूरी तरह से मनुष्य बन जाता है। समय के साथ, यीशु का बपतिस्मा होता है, वह जंगल में शैतान के प्रलोभन को सफलतापूर्वक हरा देता है, और उसे मसीहा घोषित किया जाता है।

यीशु अपने मसीहाई समुदाय के नए नेताओं के रूप में 12 शिष्यों को चुनता है और उनमें निवेश करता है। वह परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाता है, कि परमेश्वर की भूमिका यीशु मसीहा में आ गई है। यीशु इसे दुष्टात्माओं को निकालने, चमत्कार करने और गरीबों को सुसमाचार सुनाने के द्वारा प्रदर्शित करता है।

यीशु पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छा और योजना का पालन करते हैं, पाप रहित रहते हैं। बहुत से लोग उनसे प्रेम करते हैं, लेकिन यहूदी, धार्मिक और राजनीतिक नेता उनका विरोध करते हैं। न केवल वह मसीहा की उनकी अवधारणा के अनुरूप नहीं है, बल्कि वह उनके अभिमान, विश्वास और परंपराओं को भी कमजोर करता है।

विरोध बढ़ता है क्योंकि महासभा यीशु को एक अवैध मुकदमे में दोषी ठहराती है। चूंकि राष्ट्र पर रोमन साम्राज्य का कब्ज़ा था, इसलिए नेताओं को यीशु को अपने कट्टर दुश्मन, पोंटियस पिलातुस के पास भेजना चाहिए, जिसने यीशु को निर्दोष पाया। हालाँकि, यहूदी नेताओं और भीड़ के दबाव में, पिलातुस ने यीशु को फिर भी सूली पर चढ़ा दिया।

यीशु, निर्दोष, धर्मी, क्रूस पर मर जाता है। मानवीय दृष्टिकोण से, यीशु इस घृणित, घृणित रूप से दुष्ट कृत्य में एक पीड़ित के रूप में मर जाता है। फिर भी बाइबिल की कहानी इस बात पर प्रकाश डालती है कि यह मृत्यु पापियों को बचाने के लिए परमेश्वर की शाश्वत योजना का हिस्सा है।

यीशु का मिशन खोए हुए लोगों को ढूँढ़ना और बचाना है, और वह ऐसा करने में कभी विफल नहीं होता। यीशु पापियों को उनके विकल्प, विजेता, बलिदान, दूसरे आदम, मुक्तिदाता और शांतिदूत

के रूप में बचाता है। अविश्वसनीय रूप से, यीशु न केवल दुनिया को क्रूस पर ले जाता है, बल्कि तीन दिन बाद विभिन्न स्थानों, स्थितियों और समूह सेटिंग्स में मृतकों में से भी जी उठता है।

500 से ज़्यादा लोग पुनर्जीवित यीशु को देखते हैं। अपने पुनरुत्थान के ज़रिए, वह अपनी पहचान की पुष्टि करता है, पाप और मौत को हराता है, अपने लोगों को नया जीवन देता है, और अपने लोगों के भविष्य के पुनरुत्थान का पूर्वानुभव प्रदान करता है। यीशु अपने शिष्यों को निर्देश देता है कि वे सभी राष्ट्रों में सुसमाचार ले जाएँ ताकि अब्राहम से किया गया परमेश्वर का वादा पूरा हो कि वह उसके ज़रिए सभी लोगों को आशीर्वाद देगा।

उसके शिष्यों को दूसरों को शिष्य बनाना है जो फिर दूसरों को शिष्य बनाएंगे। पिन्तेकुस्त के दिन, यीशु एक आत्मा भेजता है जो कलीसिया को परमेश्वर के नए नियम के लोगों के रूप में बनाती है। आत्मा कलीसिया को राष्ट्रों के बीच मसीह की गवाही देने की शक्ति देती है।

प्रारंभिक चर्च प्रेरितों की शिक्षा, संगति, रोट्टी तोड़ने और प्रार्थना के लिए खुद को समर्पित करता है, प्रेरितों के काम 2:42। प्रारंभिक चर्च सुसमाचार प्रचार में शामिल है, पद 38 से 41, उन लोगों के साथ सुसमाचार साझा करना जो मसीह को उद्धार के साधन के रूप में नहीं जानते हैं। चर्च शिष्यत्व के लिए प्रतिबद्ध है, विश्वासियों को जीवन के एक तरीके के रूप में यीशु का अनुसरण करने का निर्देश देता है। चर्च संगति के लिए समर्पित है, पद 42 से 47, एक साथ जीवन साझा करना, एक दूसरे को जानना और एक दूसरे से प्यार करना।

चर्च मंत्रालय में भी शामिल है, श्लोक 42 से 46, एक दूसरे के लिए प्रार्थना करना, एक दूसरे को देना और एक दूसरे की ज़रूरतों को पूरा करना। चर्च आराधना में सक्रिय है, श्लोक 46, परमेश्वर की स्तुति करना, सार्वजनिक रूप से एक साथ मिलना, और निजी तौर पर सिखाना, प्रार्थना करना, देना और एक साथ भोजन करना। चर्च बढ़ता है और उत्पीड़न का सामना करता है, लेकिन सुसमाचार फैलता रहता है।

कुछ यहूदी और कई गैर-यहूदी मसीह पर भरोसा करते हैं। चर्च स्थापित किए जाते हैं, और चक्र चलता रहता है। इस दौरान, चर्च सही सिद्धांत सिखाते हैं, गलतियों को सुधारते हैं, और विश्वासियों को प्रेम, एकता, पवित्रता और सच्चाई में जीने के लिए कहते हैं।

पौलुस और पतरस जैसे प्रेरित भी उद्धार के बारे में सिखाते हैं। परमेश्वर पिता उद्धार की योजना बनाता है, पुत्र उसे पूरा करता है, और आत्मा उसे उन सभी पर लागू करता है जो मसीह में विश्वास करते हैं। परमेश्वर विश्वासियों को चुनता है, बुलाता है, और मसीह में नया जीवन देता है।

परमेश्वर उन सभी को क्षमा करता है, धर्मी घोषित करता है, और अपने परिवार में अपनाता है जो मसीह में विश्वास रखते हैं। परमेश्वर अपने लोगों को मसीह में पवित्र बनाता है और अंततः उन सभी को महिमा देगा जो उसे जानते हैं। परमेश्वर अपने उदार प्रेम और अपनी महिमा के लिए बचाता है।

बाइबिल की कहानी के अनुसार, सृष्टि, पतन, मुक्ति और अब पूर्णता में परमेश्वर का ज्ञान। यीशु ने जो शुरू किया है, उसे पूरा करेंगे। वह राजा के रूप में शासन करने के लिए वापस आएंगे, न्याय, शांति, प्रसन्नता और विजय लाएंगे।

राज्य, राजा यीशु के माध्यम से परमेश्वर का अपने लोगों पर शासन है। राज्य एक वर्तमान वास्तविकता और मसीह के दूसरे आगमन से जुड़ा एक भविष्य का वादा दोनों है। यीशु इसे चरणों में लाता है।

इसका उद्घाटन उसके सार्वजनिक मंत्रालय में होता है जब वह शिक्षा देता है, चमत्कार करता है, और दुष्टात्माओं को निकालता है, मत्ती 12:28, मत्ती 13:1 से 50 तक। जब यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ पर चढ़ता है, जो सबसे बड़ी शक्ति का स्थान है, तो राज्य का विस्तार होता है, इफिसियों 1:20, और 21, और प्रेरितों के प्रचार के माध्यम से हजारों लोग इसमें प्रवेश करते हैं, प्रेरितों के काम 2:41, 47। राज्य की परिपूर्णता मसीह की वापसी की प्रतीक्षा कर रही है जब वह अपने महिमामय सिंहासन पर बैठेगा, मत्ती 25:31।

मसीह संसार का न्याय करेगा, विश्वासियों को राज्य के अंतिम चरण में आमंत्रित करेगा, जबकि अविश्वासियों को नरक में भेज देगा, मत्ती 25:34 और 41। समापन और इन संबंधित सत्यों को दर्शाने वाला क्लासिक अंश प्रकाशितवाक्य 20 से 22 है। जिस तरह उत्पत्ति 1 और 2 से पता चलता है कि बाइबिल की कहानी भगवान द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माण के साथ शुरू होती है, प्रकाशितवाक्य 20 से 22 दिखाता है कि यह भगवान द्वारा एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी के निर्माण के साथ समाप्त होता है।

कहानी परमेश्वर की सृष्टि की अच्छाई से शुरू होती है और नई सृष्टि की अच्छाई के साथ समाप्त होती है। कहानी परमेश्वर के अपने लोगों के साथ एक बगीचे के मंदिर में रहने से शुरू होती है और परमेश्वर के अपने वाचा के लोगों के साथ स्वर्ग, एक नई पृथ्वी, शहर, बगीचे और मंदिर में रहने के साथ समाप्त होती है। स्वर्ग धरती पर उतर आता है।

स्वर्ग और पृथ्वी एक हैं। एक बार और हमेशा के लिए, परमेश्वर की जीत पूरी हो गई है। परमेश्वर का निर्णय अंतिम है।

पाप परास्त हो गया है। न्याय की जीत हुई है। पवित्रता हावी हो गई है।

परमेश्वर की महिमा अबाधित है, और राज्य साकार हो गया है। मसीह में ब्रह्मांडीय मेलमिलाप की परमेश्वर की शाश्वत योजना वास्तविक हो गई है, और 1 कुरिन्थियों 15 की भाषा में परमेश्वर सब कुछ है। अपनी जीत के एक हिस्से के रूप में, परमेश्वर ने शैतान और उसके राक्षसों को आग की झील में डाल दिया, जहाँ वे भस्म नहीं हुए, बल्कि, उद्धरण, हमेशा के लिए दिन-रात तड़पते रहे।

प्रकाशितवाक्य 20:10, शैतान और दुष्टात्माओं को बहाल नहीं किया जाता बल्कि उन्हें उचित दंड प्राप्त करने के लिए नरक में भेजा जाता है, और वे हमेशा के लिए वहाँ पीड़ित रहते हैं। तब परमेश्वर सभी का न्याय करता है: जिन्हें दुनिया महत्वपूर्ण मानती है, जिन्हें दुनिया कभी नोटिस

नहीं करती है, और बीच में हर कोई, उद्धरण, हर कोई जिसका नाम जीवन की पुस्तक में लिखा नहीं पाया जाता है उसे आग की झील में फेंक दिया जाता है। प्रकाशितवाक्य 20 और पद 15।

परमेश्वर केवल क्रूर रोमन सम्राटों को ही नरक में नहीं भेजता, जैसा कि हम उम्मीद कर सकते हैं। वह उन सभी को नरक में भेजता है जो यीशु के लोग नहीं हैं। दानियेल 12, 1, प्रकाशितवाक्य 14:10 और 11, प्रकाशितवाक्य 21:8 और 21:27 देखें।

शानदार ढंग से, नया आकाश और नई पृथ्वी आती है, और परमेश्वर अपने वाचा के लोगों के साथ रहता है। प्रकाशितवाक्य 21:3 और 7. यह उन्हें सात्वना देता है: अब कोई दर्द, मृत्यु, वगैरह नहीं है।

पद 4. सब कुछ नया बनाता है, पद 5. और घोषणा करता है, यह हो गया, पद 6. फिर स्वर्ग को एक परिपूर्ण मंदिर, गौरवशाली, बहुराष्ट्रीय और पवित्र के रूप में दर्शाया गया है। प्रकाशितवाक्य 21, पद 9 से 27. परमेश्वर के लोग सही मायने में परमेश्वर की छवि धारण करते हैं, उसकी सेवा करते हैं, उसके साथ शासन करते हैं, सीधे उसका सामना करते हैं, और उसकी आराधना करते हैं।

22:1 से 5. परमेश्वर को वह पूजा मिलती है जिसके वह हकदार हैं, और मनुष्य वर्णन से परे धन्य होते हैं, अंततः परमेश्वर की छवि में बनाए जाने की वास्तविकताओं को पूरी तरह से जीते हैं। परमेश्वर के सिद्धांत के साथ तैयार की गई बाइबिल की कहानी के अधिक विस्तृत अवलोकन के लिए, डीए कार्सन, वह परमेश्वर जो वहाँ है, परमेश्वर की कहानी में अपना स्थान ढूँढ़ना देखें। परमेश्वर को जानना, बाइबिल की कहानी, और हमारा धर्मशास्त्र।

बाइबिल की कहानी धर्मशास्त्र में हमारे विषयों को आकार देती है और उन्हें ढाँचा प्रदान करती है। सृष्टि, पतन, मुक्ति और पूर्णता धर्मशास्त्र के क्रम और विषयों को ढाँचा प्रदान करते हैं, जो अनिवार्य रूप से उन विषयों का विस्तार हैं। ईश्वर, सृष्टि, मानवता, पाप, यीशु और उनका उद्धार कार्य, पवित्र आत्मा द्वारा मसीह के कार्य को हमारे उद्धार के लिए लागू करना, और चर्च और भविष्य।

बाइबिल की कहानी हमारे धर्मशास्त्र की विषय-वस्तु को भी आकार देती है और ढाँचा बनाती है। इस प्रकार, हम बाइबिल की व्याख्या करने और बाइबिल की कहानी और विश्वदृष्टि के अनुसार और उसके मार्गदर्शन में अपने धर्मशास्त्र को विकसित करने का प्रयास करते हैं। हम नम्र श्रोताओं के रूप में शास्त्र पढ़ना चाहते हैं, जैसा कि हमने पहले कहा, परमेश्वर के अधीन और इस प्रकार उसके वचन के अधीन।

इसलिए, हम इस तरह से धर्मशास्त्र का अनुसरण करते हैं। यह देखना सहायक है कि बाइबल की कहानी से बाइबल की सच्चाईयाँ किस तरह धर्मशास्त्र के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बढ़ावा देती हैं और स्पष्ट करती हैं। हम धर्मशास्त्र, बाइबल की कहानी की रूपरेखाओं पर व्यापक रूप से नज़र डालेंगे और देखेंगे कि धर्मशास्त्र का अनुसरण करने में प्रत्येक हमें किस तरह से मार्गदर्शन करता है।

यहाँ हमारे शीर्षक हैं। ईश्वर, उसका रहस्योद्घाटन, और हमारा धर्मशास्त्र। सृष्टि और हमारा धर्मशास्त्र।

मानवता और हमारा धर्मशास्त्र। पाप और वही। मसीह और हमारा धर्मशास्त्र।

मोक्ष और वही। हमारे धर्मशास्त्र में पवित्र आत्मा। हमारे धर्मशास्त्र में चर्च।

और हमारे धर्मशास्त्र का भविष्य। ईश्वर, उनका रहस्योद्घाटन और हमारा धर्मशास्त्र। ईश्वर की प्रकृति सभी सत्य का आधार है और हमारे धर्मशास्त्र के लिए एक दिशा-निर्देश प्रदान करती है।

ईश्वर की अनंतता इस तथ्य को रेखांकित करती है कि केवल वही भूत, वर्तमान और भविष्य का सम्पूर्ण ज्ञान रखता है। हम सीमित हैं। वह सीमित नहीं है।

ईश्वर की कृपा हमारे धर्मशास्त्र की शुरुआत करती है, क्योंकि ईश्वर के बारे में सारा ज्ञान उनके उदार आत्म-प्रकटीकरण से प्रवाहित होता है। हम ईश्वर के बारे में उनकी कृपा के अलावा कुछ नहीं जानते, लेकिन हम उनकी कृपा से उन्हें जान सकते हैं और जानते भी हैं। ईश्वर की सच्चाई यह दर्शाती है कि उनका आत्म-प्रकटीकरण सत्य का संचार करता है और ऐसा सुसंगत रूप से करता है।

परमेश्वर का व्यक्तिगत स्वभाव हमें याद दिलाता है कि उसका ज्ञान भी संबंधपरक है, जो हमें उसके साथ वाचा के रिश्ते की ओर इंगित करता है। परमेश्वर की पवित्रता स्पष्ट करती है कि धर्मशास्त्र समग्र है, जो हमें प्रभु का भय मानने और पवित्रता में चलने के लिए प्रेरित करता है। परमेश्वर का प्रेम स्पष्ट करता है कि ईसाई धर्मशास्त्र को आत्म-अवशोषित नहीं होना चाहिए, बल्कि बाहरी रूप से परमेश्वर और दूसरों की भलाई की ओर निर्देशित होना चाहिए।

परमेश्वर की महिमा इस बात पर जोर देती है कि परमेश्वर का सारा सच्चा ज्ञान परमेश्वर से, परमेश्वर के द्वारा, और परमेश्वर के लिए है। प्रकाशितवाक्य 11:33 से 36. परमेश्वर का स्वयं-प्रकाशन उसे प्रतिबिम्बित करता है और हमारे धर्मशास्त्र का मार्गदर्शन भी करता है।

परमेश्वर का आत्म-प्रकटीकरण अनुग्रहपूर्ण है। वह इसे स्वतंत्र रूप से आरंभ करता है और इसके माध्यम से हमें आशीर्वाद देता है। यह सत्य है, जो ईमानदारी से दर्शाता है कि परमेश्वर कौन है, वह क्या करता है, और वह हमसे कैसे संबंध रखता है।

यह एकता है। यद्यपि यह विभिन्न रूपों में प्रसारित होता है, लेकिन ईश्वर का अपने बारे में, मानवता के बारे में और जीवन के बारे में संचार एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। यह व्यक्तिगत है, जो ईश्वर और उसके तरीकों को हम तक पहुँचाता है।

यह प्रस्तावात्मक है, ईश्वर, मानवता, जीवन, इतिहास और मोक्ष के बारे में सत्य का खुलासा करते हुए कथन या दावे करता है। चूँकि हम ईश्वर के स्व-प्रकाशन के प्राप्तकर्ता हैं, इसलिए यह सादृश्यात्मक है, क्योंकि वह संवाद करने के लिए मानवीय संदर्भों, संस्कृतियों और भाषाओं का उपयोग करता है। सादृश्यात्मक का अर्थ है कि यह हर तरह से ईश्वर के स्वयं के ज्ञान के समान

नहीं है, और यह कुछ मायनों में ईश्वर के स्वयं के ज्ञान के इतना विपरीत नहीं है कि हम उसे बिल्कुल भी न जान सकें।

यह सादृश्यात्मक है, जैसे कि ईश्वर के पास कुछ निश्चित तरीकों से खुद के बारे में ज्ञान है। ईश्वर का खुद के बारे में रहस्योद्घाटन आंशिक है क्योंकि अनंत ईश्वर हम सीमित मनुष्यों को केवल सीमित जानकारी ही बता सकता है। यह ऐतिहासिक है, क्योंकि ईश्वर अंतरिक्ष और समय में हमसे संवाद करता है, जो दुनिया के धर्मों में अद्वितीय है।

यह शास्त्र के भीतर प्रगतिशील है, क्योंकि यह कई पीढ़ियों से संबंधित है, और समय के साथ धीरे-धीरे अपने आत्म-प्रकटीकरण का विस्तार करता है। इस प्रकार, धर्मशास्त्र केवल ईश्वरीय पहल के माध्यम से ही संभव है। प्रकट सत्य की सामग्री और एकता पर आधारित है, इसमें वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक घटक हैं, मानव संस्कृति में अंतर्दृष्टि की आवश्यकता है, यह संपूर्ण नहीं हो सकता है, जीवन के सभी पहलुओं से जुड़ा हुआ है, और इसका अध्ययन एक बारहमासी प्रक्रिया है।

इसके अलावा, परमेश्वर का अनुग्रहपूर्ण आत्म-प्रकटीकरण विभिन्न तरीकों से और विभिन्न संदर्भों में दिया गया है, फिर भी आश्चर्यजनक एकता के साथ। परमेश्वर सृष्टि के माध्यम से सभी लोगों के लिए हर समय और हर जगह खुद को प्रकट करता है, जो उसे अपने निर्माता और प्रभु के रूप में गवाही देता है, भजन 19, 1-6, रोमियों 1:18-32। यह मनुष्यों को अपनी छवि में बनाकर भी ऐसा करता है।

नैतिक नियम मानव हृदय पर लिखे गए हैं, रोमियों 2:12-16। इसलिए, हमारा धर्मशास्त्र विभिन्न बौद्धिक, सांस्कृतिक और व्यावसायिक दुनियाओं को शामिल करता है। सामान्य प्रकाशन और सामान्य अनुग्रह हमें याद दिलाते हैं कि स्पष्ट रूप से गैर-ईसाई कार्य और संस्कृति में भी अनिवार्य रूप से ईश्वर की सच्चाई के लिए कुछ गवाह शामिल होंगे।

धर्मशास्त्र "न्याय, बुद्धि, सत्य और सुंदरता की झलक को पहचान सकता है और उसका जश्न मना सकता है जो हम जीवन के सभी पहलुओं में अपने आस-पास पाते हैं। अंततः, सांस्कृतिक जुड़ाव पर सुसमाचार और बाइबिल की शिक्षा की समझ से ईसाइयों को अपने सहकर्मियों और पड़ोसियों के काम के पीछे ईश्वर के हाथों की सबसे अधिक सराहना करनी चाहिए।" टिमोथी केलर और कैथरीन लीरी एल्सडॉर्फ।

हर अच्छी मुलाकात आपके काम को परमेश्वर के काम से जोड़ती है। परमेश्वर भी खुद को खास लोगों के सामने खास समय और जगहों पर प्रकट करता है, धीरे-धीरे और ज़्यादा स्पष्ट रूप से खुद को और अपने वाचा संबंधों को बताता है। वह खुद को ऐतिहासिक कार्यों के ज़रिए प्रदर्शित करता है, उदाहरण के लिए, निर्गमन, ईश्वरीय भाषण, उदाहरण के लिए, दस आज्ञाएँ, और उसके वाचा के लोग, जिनकी पवित्रता, प्रेम और न्याय उसके अपने चरित्र को दर्शाते हैं, निर्गमन 19:5, और 6, प्रकाशितवाक्य 19, लैव्यव्यवस्था 19, क्षमा करें, 1 से 18।

परमेश्वर ने यीशु और उसके अवतार, पाप रहित जीवन, शिक्षा, उसके राज्य की घोषणा, चमत्कार, क्रूस पर चढ़ना, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, शासन और वादा किए गए वापसी में खुद को पूरी तरह से प्रकट किया है, यूहन्ना 1:1 से 18, इब्रानियों 1:1 से 4। परमेश्वर ने प्रेरित भविष्यद्वक्ताओं, प्रेरितों और पवित्र शास्त्र के माध्यम से भी खुद को प्रकट किया है, जो परमेश्वर के आत्म-प्रकटीकरण को सटीक रूप से दर्ज और व्याख्या करता है। इसके अलावा, शास्त्रों को परमेश्वर का वचन कहा जाता है और वे स्वयं परमेश्वर के आत्म-प्रकटीकरण का सबसे सुलभ रूप हैं। भजन 19: 7 से 14, मत्ती 5:17 से 20, यूहन्ना 10:35, 2 तीमोथियुस 3:15 से 4:5, 1 पतरस 1:22 से 25।

इस वजह से, धर्मशास्त्र प्रभु के भय से शुरू होता है, नीतिवचन 1:1 से 7। इसके लिए हमें खुद को ऐसे प्राणियों के रूप में देखना होगा जो सृष्टिकर्ता और उसकी दुनिया को जानने की कोशिश कर रहे हैं, उसके आत्म-प्रकाशन पर निर्भरता के माध्यम से, जिसे हमारे धर्मशास्त्र में सत्य और आधिकारिक शास्त्रों में सबसे स्पष्ट रूप से बताया गया है। ईश्वर की रचना भी हमारे धर्मशास्त्र के लिए एक घटक के रूप में कार्य करती है।

अनंत, स्वयं-अस्तित्ववान, व्यक्तिगत, संप्रभु, पवित्र और अच्छे प्रभु ने शक्तिशाली ढंग से बात की और एक अच्छा ब्रह्मांड बनाया, जैसा कि हमने देखा है, स्थिर प्रतिध्वनि से इसका प्रमाण मिलता है, और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा था। सृष्टि के छठे दिन अच्छाई पर प्रकाश डाला गया जब परमेश्वर ने कहा कि यह बहुत अच्छा है। उत्पत्ति 1:31।

प्रकाश, भूमि, वनस्पति और पशुओं के ईश्वर के उदार प्रावधान हमारे लाभ के लिए दिए गए आशीर्वाद हैं, जैसे कि ईश्वर को जानने, विवाह करने, संतान पैदा करने और काम करने की हमारी क्षमताएँ। इस प्रकार, अच्छा ईश्वर विश्वासियों के लिए एक अच्छी दुनिया बनाता है, अच्छा और दूसरों का भला करता है। सृष्टि ईश्वर और उसकी अच्छाई और शक्ति की गवाही देती है।

सत्य, अच्छाई, सुंदरता और शांति प्रचुर मात्रा में है। परिणामस्वरूप, यह उचित है कि हम ईश्वर के रहस्योद्घाटन के प्रकाश में, सृष्टि के सभी पहलुओं, जीवन के सभी पहलुओं को समझने का प्रयास करें। हमारे धर्मशास्त्र में मानवता।

मनुष्य के रूप में हम कौन हैं, यह हमारे धर्मशास्त्र को भी निर्देशित करता है। प्राणी के रूप में, हम स्वाभाविक रूप से सीमितता के सभी चिह्नों को धारण करते हैं। ओह, मनुष्य के रूप में हमारा ज्ञान सीमित है, जो सृष्टिकर्ता-सृजन के ईश्वर के भेद को दर्शाता है।

इससे भी बढ़कर, हमें परमेश्वर ने अपनी छवि में बनाया है ताकि हम उससे प्रेम करें, उसके चरित्र को प्रतिबिम्बित करें, और उसके मिशन की सेवा करें। इस प्रकार, ज्ञान केवल अनुसरण करने के लिए एक अच्छा योग नहीं है, बल्कि यह हमारे लिए परमेश्वर के मूल और मौलिक उद्देश्यों से संबंधित है, कि हम परमेश्वर, दूसरों और उनकी सृष्टि से प्रेम करें और उनकी सेवा करें। उत्पत्ति 1:26-28.

इस तरह के प्रेम और सेवा के लिए हमें ईश्वर, स्वयं, संस्कृति और सृष्टि के बारे में ज्ञान की आवश्यकता होती है। ईश्वर को जानना, और इसलिए ईश्वर को जानने के हिस्से के रूप में

धर्मशास्त्र को जानना, हमारे उद्देश्य को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण है। जैसे-जैसे हम इन सच्चाइयों में ईश्वर को अधिक से अधिक जानते हैं, हम सत्य, अच्छाई, सुंदरता और शांति को अपने आप में महान लक्ष्यों के रूप में और ईश्वर को जानने, प्रतिबिंबित करने और उनकी सेवा करने के माध्यम से महिमा करने के तरीकों के रूप में उचित रूप से खोज सकते हैं।

पाप और हमारा धर्मशास्त्र। दुर्भाग्य से, हमारे पाप की वास्तविकता परमेश्वर के बारे में हमारे ज्ञान को विकृत करती है, और इस प्रकार हमारे धर्मशास्त्र को भी। मनुष्य परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करते हैं, जिससे परमेश्वर, दूसरों, स्वयं और सृष्टि के साथ हमारा संबंध बिगड़ जाता है।

उत्पत्ति 3, रोमियों 5:12-21। अब हम परमेश्वर की छवि और पाप दोनों से ही पहचाने जाते हैं। हम न्याय, शांति और सुंदरता के लिए उचित रूप से तरसते हैं, लेकिन हम इन चीजों को विकृत करते हैं या परमेश्वर की महिमा और दूसरों की भलाई के बजाय केवल अपने स्वार्थ के लिए इन्हें खोजते हैं।

वास्तव में, पाप हमारे मन, भावनाओं, दृष्टिकोण, इच्छा और कार्यों को संक्रमित करता है और प्रभावित करता है। पवित्रशास्त्र इस भ्रष्टाचार को विभिन्न तरीकों से समझाता है, आध्यात्मिक मृत्यु, अंधकार, कठोरता, बंधन और अंधेपन जैसी छवियों का उपयोग करता है। मरकुस 7:20-23.

रोमियों 1:18-32. रोमियों 3:9-20. 2 कुरिन्थियों 4:3-4.

इफिसियों 2:1-3. इफिसियों 4:17-19. इस प्रकार, हमारा धर्मशास्त्र अक्सर सीमितता, पूर्वाग्रह और सांस्कृतिक अदूरदर्शिता से चिह्नित होता है और स्वार्थ, गर्व, प्रतिष्ठा, लालच या सत्ता की प्यास से प्रेरित हो सकता है।

यहाँ तक कि हमारी ईसाई विद्वत्ता भी इन समस्याओं को दर्शाती है। मसीह और हमारा धर्मशास्त्र। शुक्र है कि मसीह हमसे महान हैं, और वे इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि हमें धर्मशास्त्र में कैसे आगे बढ़ना है।

यीशु वचन है, परमेश्वर का पूर्णतम और स्पष्टतम प्रकाशन। यूहन्ना 1:1-18. इब्रानियों 1:1-4.

यीशु ही संसार के लिये सत्य और ज्योति है जो पाप के कारण अन्धकारमय है। यूहन्ना 1:4-18. 8-12.

14:6. यीशु प्रभु है, सर्वोच्च अधिकारी है जो हमारे जीवन के सभी पहलुओं में, जिसमें हमारी सोच भी शामिल है, हमारी निष्ठा और अधीनता का हकदार है और इसकी मांग करता है। फिलिप्पियों 2:5-11.

वह एक शिक्षक भी है जो हमें अपने शिष्यों के रूप में ढालता है और हम पर निवेश करता है, हमें परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाता है और अपने चर्च और अपने समुदाय का निर्माण करता है। इसके अलावा, यीशु घोषणा करता है कि सच्ची आराधना आत्मा और सच्चाई में होती है, हमें उन

शास्त्रों की खोज करने का आग्रह करता है जो उसके बारे में गवाही देते हैं, और हमसे अपेक्षा करता है कि हम अपनी पहचान की जाँच करें, उसकी पहचान, चमत्कार, शिक्षाओं और कार्यों की जाँच करें ताकि यह पता चल सके कि वह परमेश्वर से है। यीशु खुद को सच्चाई से जोड़ता है, गलतियों को सुधारता है, और पवित्र आत्मा को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में भेजता है जो हमें सच्चाई में मार्गदर्शन करेगा।

यीशु ने अनन्त जीवन को परमेश्वर को जानने और यह प्रार्थना करने के रूप में भी परिभाषित किया है कि परमेश्वर हमें वचन के द्वारा पवित्र बनाए, जिसे वह सत्य के रूप में दर्शाता है। मत्ती 5:7. यूहन्ना 1:15-18.

यूहन्ना 14:6. और 17:3-17. प्रेरित ने जोर देकर कहा, उद्धारण, मसीह में बुद्धि और ज्ञान के सभी खजाने छिपे हुए हैं, कुलुस्सियों 2:3. परिणामस्वरूप, सभी सत्य, और इस प्रकार सभी धर्मशास्त्र, मसीह में ही अपना ध्यान और स्रोत पाते हैं। वास्तव में, सारी सृष्टि, जिसमें हमारा सारा ज्ञान, शिक्षा और व्यवसाय शामिल है, मसीह द्वारा है, मसीह में और मसीह के लिए एक साथ रखा गया है, कुलुस्सियों 1:15-20.

हमारे धर्मशास्त्र में उद्धार। आश्चर्यजनक रूप से, हमारा धर्मशास्त्र ईश्वर का विश्लेषण या जांच करने का एक अमूर्त प्रयास नहीं है। धर्मशास्त्र वाचाबद्ध है।

अर्थात्, परमेश्वर हमें अपनी छवि में बनाता है, धैर्यपूर्वक हमारे विद्रोह को सहता है, और हमें बचाने के लिए अपने पुत्र को भेजता है ताकि हम उसे जान सकें और उसके साथ वाचा के रिश्ते में रह सकें। धर्मशास्त्र अत्यंत व्यक्तिगत है क्योंकि यह परमेश्वर के बारे में है और परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते के बारे में है। बाइबिल की कहानी में उद्धार का सिद्धांत इस सत्य को उजागर करता है और इसके प्रकाश में ईसाई पहचान को परिभाषित करता है।

हम आध्यात्मिक रूप से मसीह से जुड़े हुए हैं और नए जीवन के प्राप्तकर्ता हैं। हम मसीह में विश्वासी हैं और उसके द्वारा धर्म के रूप में स्वीकार किए जाते हैं। हम परमेश्वर की संतान हैं और मसीह की छवि में पवित्र लोगों में परिवर्तित हो रहे हैं।

हम मसीह में हैं। हमें डरने की कोई बात नहीं है, साबित करने की कोई बात नहीं है, छिपाने की कोई बात नहीं है। इसलिए धर्मशास्त्र का कार्य हमारी पहचान, हमारे विकास और हमारी सुरक्षा की खोज को सक्षम और बढ़ावा देता है।

धर्मशास्त्र हमें परमेश्वर के मार्ग पर, परमेश्वर के वचन के अनुसार, और परमेश्वर की शक्ति से चलने के लिए बुद्धि प्रदान करता है। हमारे धर्मशास्त्र में पवित्र आत्मा। हमारे लिए यीशु का कार्य आत्मा के माध्यम से हम पर लागू होता है, जो हमें मसीह से जोड़ता है।

पवित्र आत्मा ने शास्त्रों को प्रेरित किया है और अब हमें इसे समझने में सक्षम बनाता है। वह हमारे अंदर वास करता है, हमें सशक्त बनाता है, और हमारे अंदर फल पैदा करता है। वह हमारे चर्च के नेताओं का मार्गदर्शन करता है और हमारी आराधना को सक्षम बनाता है।

वह हमें आध्यात्मिक उपहार देता है ताकि हमारे माध्यम से चर्च को आशीर्वाद मिले। परिणामस्वरूप, हमारा धर्मशास्त्र अपनी विषय-वस्तु के लिए आत्मा पर निर्भर है। उसने बाइबल को प्रेरित किया।

हमारा धर्मशास्त्र अपनी अंतर्दृष्टि के लिए आत्मा पर निर्भर है। हम कड़ी मेहनत से अध्ययन करते हैं, लेकिन वह हमें वचन की सही व्याख्या करने में सक्षम बनाता है। हमारा धर्मशास्त्र अपने चर्च संदर्भ के लिए आत्मा पर निर्भर है।

उन्होंने चर्च का उद्घाटन किया और उसमें वास किया। हमारा धर्मशास्त्र अपनी फलदायकता के लिए आत्मा पर निर्भर है। वह हमारे चर्च के शिक्षकों को सशक्त बनाता है और हमें और हमारे धर्मशास्त्र को परमेश्वर और दूसरों की सेवा में आगे बढ़ाता है।

चर्च में, हमारे धर्मशास्त्र में, अपने पाप रहित जीवन, प्रतिस्थापन मृत्यु और शारीरिक पुनरुत्थान के माध्यम से, यीशु हमें अपने लिए लोगों के रूप में छुड़ाता है। एक चर्च के रूप में, हम सत्य से चिह्नित हैं। हम प्रेरितों की शिक्षा से आकार लेते हैं।

हम त्रुटि का विरोध करते हैं, और हम उसके वचन के समुदाय के रूप में एक साथ जीवन साझा करते हैं। मसीह के साथ हमारी एकता के माध्यम से, हम परमेश्वर की भलाई, विशेष रूप से उसकी एकता, पवित्रता, प्रेम और सच्चाई को भी प्रदर्शित करते हैं। प्रेरितों के काम 2:41 से 47, इफिसियों 2:4 से 10, और 4:1 से 24।

परमेश्वर के लोगों के रूप में, हम अपने आपको जीवित, पवित्र और स्वीकार्य बलिदान के रूप में परमेश्वर को समर्पित करके उसकी आराधना करते हैं, आंशिक रूप से हमारे मन के नवीनीकरण और परमेश्वर की इच्छा की समझ के द्वारा परिवर्तित होने के माध्यम से। रोमियों 12:1 और 2, इफिसियों 4:17 से 24। इस प्रकार, हमारा धर्मशास्त्र केवल हमारा अपना व्यक्तिगत प्रयास नहीं है, बल्कि यह पूरे जीवन में एकीकृत है और परमेश्वर के आधिकारिक वचन के तहत परमेश्वर के लोगों के रूप में समुदाय में इसका अनुसरण किया जाता है।

इसके लिए हमसे भी कुछ बातें अपेक्षित हैं: मानवता, विश्वास, अनुग्रह पर निर्भरता, दूसरों के प्रति सम्मान, परिश्रम, धैर्य, सावधानी और दृढ़ता के लिए आह्वान। ईसाई होने के नाते, हमें एक-दूसरे की आवश्यकता है और हम एक साथ जीवन साझा करते हुए वचन के तहत समुदाय में धर्मशास्त्र सीखते हैं। अंत में, हमारे धर्मशास्त्र में भविष्य।

इतिहास के लिए परमेश्वर के अंतिम उद्देश्य धर्मशास्त्र के प्रति हमारे दृष्टिकोण को भी निर्देशित करते हैं। यीशु की वापसी, विजय और न्याय उसकी प्रभुता की घोषणा करते हैं, हमें उसके लोगों के रूप में प्रमाणित करते हैं, और स्थायी रूप से ब्रह्मांडीय न्याय और शांति स्थापित करते हैं। 2 थिस्सलुनीकियों 1:5 से 10, प्रकाशितवाक्य 20:10 से 15।

सभी झूठ को उखाड़ फेंका जाएगा, और जो लोग झूठ का अभ्यास करते हैं उन्हें अनंत नरक में निर्वासित कर दिया जाएगा। प्रकाशितवाक्य 20 से 22. बाइबल के अंतिम तीन अध्यायों में से

प्रत्येक का ध्यान नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर है, लेकिन बाइबल के अंतिम तीन अध्यायों में से प्रत्येक में नरक का संदर्भ है।

नया स्वर्ग और नई पृथ्वी परमेश्वर की अपने लोगों के साथ व्यक्तिगत उपस्थिति से चिह्नित होगी। और क्योंकि हमारे पास मसीह में नया जीवन है, इसलिए नई पृथ्वी उसकी और हमारी महिमा, उसकी और हमारी पवित्रता, उसके और हमारे प्रेम, उसकी और हमारी भलाई से चिह्नित होगी। मैं श्रद्धापूर्वक बोलता हूँ।

इसलिए, इतिहास रैखिक, उद्देश्यपूर्ण, हमारे भले के लिए और मुख्य रूप से परमेश्वर की महिमा के लिए युगांतकारी है। रोमियों 8, 18 से 39, इफिसियों 1:3 से 14। इस प्रकार, धर्मशास्त्र एक योग्य प्रक्रिया है जिसमें हम एक दूसरे की सेवा करने और परमेश्वर की महिमा करने के लिए परमेश्वर और उसकी भलाई, प्रेम, न्याय और शांति को समझने का प्रयास करते हैं।

इससे भी अधिक, हमारा धर्मवैज्ञानिक प्रयास यह स्वीकार करता है कि हम जानते हैं कि समय के साथ-साथ हम परमेश्वर के ज्ञान में वृद्धि करते हैं और उस दिन की प्रतीक्षा करते हैं जब विश्वास दृष्टि बन जाएगा। 1 कुरिन्थियों 13:9 से 12. मसीहियों के रूप में, हम सही मायने में धर्मविज्ञान को महत्व देते हैं।

यह परमेश्वर की महिमा करता है और स्वाभाविक रूप से बाइबिल की कहानी से विकसित होता है। परमेश्वर, उसका आत्म-प्रकाशन, सृष्टि, उसकी छवि में बनाए गए मनुष्यों के रूप में हमारी पहचान, यीशु, यीशु का कार्य, उद्धार, पवित्र आत्मा, चर्च और अंतिम चीजें सभी हमें धर्मशास्त्र का अध्ययन करने के तरीके का मार्गदर्शन करती हैं। आश्चर्यजनक रूप से, बाइबिल की कहानी का प्रत्येक भाग और ईसाई धर्म में प्रत्येक सत्य हमारे विश्वास, आशा और प्रेम को आकार देता है, वास्तव में, हमारे दैनिक जीवन के हर पहलू को।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम अपना ध्यान ईश्वर को जानने और धर्मशास्त्र में हमारे स्रोतों पर केंद्रित करेंगे, जिसमें परंपरा, तर्क, अनुभव और, सर्वोच्च रूप से, पवित्र शास्त्र शामिल हैं।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 3 है, ईश्वर और बाइबिल की कहानी को जानना और ईश्वर और हमारे धर्मशास्त्र को जानना।